पर्यावरण संरक्षण में विविध सहायक तत्वों का रेखांकन

डॉ0 वीरेन्द सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

पर्यावरण से छेड़–छाड़ का परिणाम मानव के समक्ष दानव के रूप में उभर रहा है। संयुक्त राष्ट्र के ग्लोबल इन्वायरमेंट, आउटलुक–3 में छपे आकड़ों के अनुसारा संन 2032 तक पृथ्वी के ऊपरी सतह का सत्तर प्रतिशत भाग तबाही की कगार पर पहुँच जाएगा।

हॉलाकि जलवायु परिवर्तन के खतरों के मद्देनजर भारत ने अपने रूख में थोड़ा लोच लाते हुए विकसित देशों को यह संदेश भी दे दिया है कि विकासशील राष्ट्र अपनी जवाबदेही निभाने को तैयार हैं, बशर्ते विकसित राष्ट्र अपने स्वार्थों को नियंत्रित करें और उनके कार्बन उत्सर्जन का बोझ ढो रही दुनिया के लिए अपनी तिजोरी का मुंह खोलें।[1]

गौरा देवी एवं चंडी प्रसाद भट्ट के बाद उभरे सुंदर लाल वहुगुणा अंततः विश्व हिंदू परिषद की गोद मे समाहित हो गए। दिल्ली में सोनिया गाँधी से मिलने की मांग को लेकर मेधा पाटेकर का धरने पर बैठना आंदोलन की वैचारिक शून्यता को ही दर्शाता है। वकील के रूप में असफल रहे एक शख्स पर्यावरणवादी वन जाते हैं और सैकड़ों कल कारखानों की बंदी, मजदूरों की बेरोजगारी एवं मालिकों की बदहाली का कारण बनते हैं। ऐसे में जब हर कोई काली बेई नदी को बचाने वाला संत सींचेवाल या कुओं को बचाने वाला श्याम जी भाई अंटाणा या पानी वाले बाबा राजेन्द्र सिंह या फिर पर्यावरण का चिंतक राजेन्द्र चौधरी नही हो सकता तब भी हर आदमी को जीने का हक है। पर यह हक उससे छीना जा रहा है। विकसित देश पचासों साल से इसी जिद पर है। कि जीओ तो हमारी तरह से।[2]

ऐसा नहीं है कि पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर आवाज नहीं उठानी चाहिए पर क्या इसकी आड़ में आर्थिक विकास एवं बढ़ती आबादी की न्यूनतम जरूरतों को पूरा करने के प्रयासों में रोक अटकाने की इजाजत की जानी चाहिए? विचारों के किसी भी युद्ध में गंभीरता उतनी ही जरूरी है जितनी सक्रियता। इसे हम बिजली की जरूरत के उदाहरण से समझ सकते हैं। बिजली आधुनिक जीवन की सांस ही नहीं औद्योगिकीकरण का आधार है। सवाल उठता है विजली पैदा कैसे की जाए? तापीय तरीके से या जल–विद्युत तरीके से पहले तरीके में कोयला, गैस, तेल का प्रयोग होगा जिससे कार्बनडाई आक्साइड गैस पैदा होगी। तापमान भी बढ़ेगा। दूसरे तरीके में बांध बनाए जाऐगें पेड़ कटेगें, टरवाइन लगाए जाएगें। इसमें समय भी अधिक लगेगा। तीसरा तरीका है अणु ऊर्जा का जो अपेक्षाकृत सस्ता, एवं स्वच्छ है। इस तरीके में समस्या इसके कचरे को ठिकाने लगाने की है। अन्य तरीके हैं सौर ऊर्जा, पतन ऊर्जा आदि। इनके उत्पादन की विधियाँ फिलहाल बिजली के बड़े स्तर पर भरोसेमंद तरीके से और सस्ते मूल्य पर पैदा नहीं कर सकती।

एक ग्रीन क्रांन्ति के सफल होने के लिऐ तीन बातें जरूरी हैं। दामों को सही–सही निर्धारित किया जाना चाहिए। यह लिक्विड बाजार के जरिए हो सकता है, दूसरा पर्यावरण के संदर्भ में भ्रम दूर होना जरूरी है।

यह स्पष्ट होना ही चाहिए कि मानवता के लिए इसका क्या महत्व है और यह कैसे उसे प्रभावित करता है? तीसरा है, दाम व लाभ विशेष का अपनाया जाना। प्रकृति में बहुत कुछ अमूल्य है और प्रतिस्थापनीय भी नहीं है पर यह समझना बेहतर है कि प्रदूषकों के अंतिम 5 प्रतिशत की समाप्ति अधिक मंहगी है या शुरू के 5 प्रतिशत के। यदि पर्यावरण वादियों को मुख्यधारा में लौटना है तो फिर उन्हें अपनी सोच और कार्यनीति दोनों को बदलना होगा

इस सच्चाई को सभी मान रहे हैं कि धरती खतरे में है। मानव सभ्यता धीरे–धीरे पतन के गर्त की ओर धकेली जा रही है। लोग इस आशंका से डरे हुए हैं कि यदि धधकती धरती को रोका नहीं गया, तो किसी दिन प्रलय हो जायेगा। लोगों को मालूम है कि धरती को बचाने के लिए क्या किया जाना है। 11 दिसंबर 1977 को जापान के क्योटो शहर में हुए ऐसे ही सम्मेलन में यह रूपरेखा बनी थी कि धरती को कैसे बचाया जाए। वैज्ञानिक कह रहे हैं कि ग्लोबल वार्मिंग के लिए औद्योगिकीकरण जिम्मेदार है, तो प्रश्न उठता है कि क्या हम उसे त्यागने के लिए तैयार हैं?

सूर्य की किरणों के पृथ्वी पर एकत्रीकरण से पृथ्वी गरम हो रही है। इसे ग्रीन हाउस प्रभाव कहते हैं। वायु मण्डल में जब कार्बन डाई आक्साइड गैस की मात्रा अधिक हो जाती है तो यह पृथ्वी में आच्छादित होकर सुरक्षित घेरा बना लेती है, जिससे सूर्य की रोशनी धरती पर तो आ जाती है किन्तु पृथ्वी से किरणों को वापस अंतरिक्ष में जाने से रोकती है, इसके कारण वायुमण्डल का तापक्रम बढ़ जाता है। वैज्ञानिकों के एक अनुमान के अनुसार विगत 50 वर्षों में पृथ्वी का औसत तापक्रम 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ा है। अब यदि 3.6^0 तापक्रम और बढ़ता है तो अंटार्कटिक के विशाल हिमखण्ड पिघल जाएंगे। परिणामतः समुद्रतल में 1.5 मीटर की वृद्धि हो जायेगी। परिणामतः 21 वीं सदी के मध्य तक बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, विशाखापट्टनम, कोचीन, त्रिवेन्द्रम, न्यूयार्क, पेरिस, लन्दन हालैंड एवं बांगलादेश के अधिकांश भागों का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। सार्क अध्ययन के अनुसार ग्रीन हाउस का सर्वाधिक प्रभाव बांग्लादेश पर पड़ेगा, जिससे फसल योग्य क्षेत्र का 13.74 प्रतिशत एवं वन क्षेत्र का 29.29 प्रतिशत भाग नष्ट हो जायेगा। जनसंख्या का 9 प्रतिशत शहरी क्षेत्र को स्थानान्तरित हो जायेगा। श्रीलंका में वर्षा प्रभावित होने से कृषि पर दुष्प्रभाव पड़ेगा। भारत में तापक्रम बढ़ने से अधिकांश फसलों की उत्पादकता प्रभावित होगी। आंधी एवं चक्रवात अनिश्चित रूप से आते रहेंगे।

ग्लोबल वार्मिंग पर हुआ क्योटो सम्मेलन, जहाँ 11 सितम्बर 1997 को क्योटो संधि हस्ताक्षरित हुई जो 16 फरवरी 2005 से अस्तित्व में आ गई। इस सक्रियता की श्रृंखला में एक और कड़ी जोड़ना समीचीन होगा और वह है 2002 का जोहान्सवर्ग सम्मेलन जिसमें विश्व के सतत् पोषणीय विकास तकनीकि संबंधी कार्य योजना के प्रस्ताव पर सहमति बनाई गई थी लक्ष्य रखा गया था कि 2015 तक ऐसे लोगों की संख्या आधी रह जाएगी जो स्वच्छता में नहीं रह पा रहे हैं। यह प्रस्ताव रखा गया था कि बिना साफ पानी पीने वालों की संख्या भी इसी अवधि में घटाकर आधी कर दी जाएगी। इस सम्मेलन में ऊर्जा प्रयोग में कुशलता बढ़ाने और स्वच्छ ऊर्जा का इस्तेमाल बढ़ाने का संकल्प भी लिया गया था पर इस मामले में कोई लक्ष्य नहीं निर्धारित किए गए थे। सच तो यह है कि विकसित देश अनेक छद्म प्रस्ताव और घोषणाओं से अपने आर्थिक हितों को ही प्रस्तुत करने की फिराक में रहते हैं।

क्लोरो–फ्लोरो कार्बन द्वारा ओजोन की परत को क्षति पहुॅचाई जा रही है क्षति की खोज के साथ ही पर्यावरण सुरक्षा के प्रति राष्ट्रीय–अतर्राष्ट्रीय प्रयत्नों में सक्रियता बढ़ने लगी। सर्व प्रथम 1974 में यह बात सामने आई कि ओजोन की मात्रा में कमी का कारण क्लोरो–फ्लोरो कार्बन का बढ़ता उपयोग है और इसके लिए विकसित राष्ट्र अधिक उत्तरदायी हैं। इस दिशा में विकसित राष्ट्रों द्वारा 1987 में मांट्रियल प्रोटोकॉल के बाद पहल की गई। अगला चरण रियो पृथ्वी सम्मेलन–1992 रहा, जिसमे प्रतिनिधियों द्वारा टिकाऊ विकास के लिए व्यापक कार्यवाही योजना ऐजेंडा–21 स्वीकृत किया गया। यह एजेंडा डेढ़ हजार वैज्ञानिकों द्वारा दी गई चेतावनी का परिणाम था जिसमें कहा गया था कि मानवीय दुःखों से बचना है और इस ग्रह पर हमारे भूमण्डलीय परिवार को क्षत विक्षत होने से रोकना है तो पृथ्वी के बारे में हमें अपनी सोच को बदलना होगा। पर्यावरण पर भारी तनाव है। और प्राचीन नस्लों की जो अपरिवर्तन शील क्षति हो रही है उसे रोका नहीं गया तो सभी जीवित प्राणियों की संख्या 2100 तक एक तिहाई रह जाएगी। यह आँकड़ा बताता है कि प्रदूषण की मार कितनी गहरी है।

राष्ट्रीय अखवार द ग्लोबल एंड मेल में 14 नवम्बर 2009 को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ;न्छम्ब्द्ध द्वारा एटमांसफिअरिक ब्राउन क्लाइड ;।ठब्द्ध पर किए गए अनुसंधान की रिपोर्ट में कहा है कि पर्यावरण के प्रदूषण के कारण बने विषैले भूरे बादलों से दक्षिण–पूर्व एशिया के भारत, चीन, पाकिस्तान, बांगलादेश और थाईलैंड के प्रमुख नगरों के लिए एक नया खतरा पैदा हो गया है। यह गंदी–धुंधली गाढ़ी बादल जैसी छत, लकड़ी–कोयले धुएं कार्बन डाई आँक्साइड, ओजोन, धूल, कोहरे और सल्फेट आदि के धुलने मिलने से बनती है। कभी–कभी और कहीं–कहीं इस पर्यावरण बादल की मोटाई या गाढ़ापन एक से लगातार तीन मील तक होती है।यह अपारदर्शी भूरा बादल, मध्यपूर्व, दक्षिणी–अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका के अमेजन थाले में सूर्य के प्रकाश को रोककर अंधेरा फैला रहा है। इससे मौसम बदलने के साथ–साथ बीमारियां बढ़ रही हैं तथा पानी अन्न की पूर्ति में रूकावट पैदा हो रही है।

संयुक्तराष्ट्र ने पिछले कुछ वर्षों पहले सन् 2005 में जो आकड़ें दिये थे। उनमें बताया गया था कि अमेरिका प्रतिवर्ष 5 अरब 95 करोड 70 लाख टन कार्बन डाइआक्साइड गैस का उत्सर्जन करता है। दूसरे स्थान पर चीन है जो प्रति वर्ष 5 अरब 32 करोड 30 लाख टन कार्बन डाइ आक्साइड गैस का उत्सर्जन करता है। आकड़ों के अनुसार भारत का स्थान पांचवा है जो प्रतिवर्ष एक अरब 16 करोड 60 लाख टन गैस का उत्सर्जन करता है। बढ़ते प्रयोग तथा कूड़े कचरे के फैलाव जैसे अनेक कारणों से धरती को तपाने वाली गैसों के उत्सर्जन में लगातार वृद्धि हो रही है। पर्यावरण में गर्मी को बढाने और प्रदूषण फैलाने का यह क्रम अगर ऐसे ही जारी रहा तो मानव समेत असंख्य जीवों का धरती पर जीना अंसभव हो जायगा। चमकीली तड़क–भड़क वाली और बेहद आकर्षक पैकिंग से कितना कूडा फैलता है। यह विश्व का हर उपभोक्ता जानता है घरों में आने वाली अनचाही डाक सौ–सौ पृष्ठों के अखवार और तरह – तरह के विज्ञापन में कागज का किस बेरहमी से दुरूपयोग हो रहा है। इसकी ओर ज्यादा लोगों का ध्यान नहीं जाता।

आज बुनियादी सच्चाई यही है कि सादगीपूर्ण जीवन मूल्य अपनाए बिना पर्यावरण और विशेषकर जलवायु बदलाव का संकट हल नहीं हो सकता है। इसके साथ ही सबसे गरीब व कमजोर वर्ग की सहायता के लिए भी और सक्रिय होने की जरूरत है वैसे तो प्रतिकूल मौसम सबको प्रभावित करता है पर इसका सबसे निकट असर उन पर पड़ता है जो सबसे गरीब व कमजोर वर्ग के हैं। यदि शीत लहर भीषण है तो उसका भी सबसे बुरा असर बेघर लोगों पर पड़ता

है। और यदि गर्म हवाएं चल रहीं है तो इसका शिकार भी आश्रय विहीन गरीब लोग सबसे पहले शिकार होते हैं। समुद्री तूफान हो या बाढ़, झोपड़ी वासियों का जीवन सबसे अधिक खतरे में पड़ता है। इसलिए जलवायु बदलाव व प्रतिकूल मौसम के दौर में नए सिरे से गरीब व कमजोर वर्ग की समस्याओं को महत्व देना होगा और उन्हें हल करने के लिए असरदार कदम उठाने होगें। सच्चाई यह है कि पर्यावरण सरंक्षण में विकेंद्रीकरण सफल नहीं होगा। पर्यावरण का लाभ देशव्यापी होता है। अतः केन्द्र सरकार के स्तर पर ही सही निर्णय हो सकते हैं। पर्यावरण की हानि के कई मामलों में सर्वोच्च न्यायालय को हस्तक्षेप करना पड़ा है। लगभग सभी तटीय राज्यों ने समुद्र तटों के पर्यावरण की रक्षा के प्रति उदासीनता दिखाई है। यदि राज्य सरकारों ने ही पर्यावरण की दुर्गति की है तो जिला पंचायतों के स्तर पर क्या परिदृश्य होगा, इसका अनुमान सहज रूप से लगाया जा सकता है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए केन्द्र सरकार को जिम्मेदारी लेनी होगी। हमें ध्यान देना चाहिए कि केन्द्र अपनी जिम्मेदारी का सही निर्वाह करे तो पर्यावरणीय समस्या से निजात पायी जा सकती है। गरीबी सबसे बड़ा प्रदूषण है, यह इंदिरागाँधी ने 1982 में पृथ्वी सम्मेलन में रेखांकित किया था। विगत की असफलताओं, वर्तमान की भारी कीमत तथा भविष्य की बड़ती जरूरतों के चलते बाजार आधारित होने के लिए सार्वजनिक नीतियां मजबूर हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मौर्य एस0डी0 (2006):संसाधन एवं पर्यावरण, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- नेगी,पी0 एस0 (200):पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेषन, मेरठ।
- डब्लू सी0वाल्टन (1970): ग्राउण्ड वाटर रिसोर्स इवेल्यूषन, एम0पी0 ग्रोव हील, न्यूयार्क, पृष्ठ 664।
- सिंह डा0 काषीनाथ सिंह, डा0 जगदीष सिंह (1997): आर्थिक भूगोल के मूल तत्व।
- मिश्र,डा0डी0के (2004) :जनसंख्या, पर्यारण एवं विकास,ए0पी0एच0 पब्लिषिंग कार्पोरेषन, नई दिल्ली।
- सिंह, रवीन्द्र (2001) पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

Copyright © 2015, Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.